International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-09-2021, Accepted: 06-10-2021, Published: 22-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 92-97

विष्णु के दशावतार में मत्स्यावतार का वर्णन

सुनील कुमार पाण्डेय
शोधार्थी, संस्कृत, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दू धर्म में विभिन्न देवताओं के अवतार की मान्यता है। प्रायः विष्णु के दस अवतार माने गये है। जिन्हें दशावतार कहते हैं। इसी तरह शिव और अन्य देवी–देवताओं के भी कई अवतार माने गये हैं।
गोवा के श्री बालाजी मंदिर के कपाट पर दशावतारों का चित्रण भगवान विष्णु हिन्दू त्रिदेवों (तीन महा देवताओं) में से एक हैं। निर्माण की योजना के अनुसार, वे ब्रह्माण्ड के निर्माण के बाद, उसके विघटन तक उसका संरक्षण करते हैं। भगवान विष्णु के दस अवतारों को संयुक्त रूप से 'दशावतार' कहा जाता है।

मूलशब्दः विष्णु के दशावतार, मत्स्यावतार

प्रस्तावना

जब मानव अन्याय और अधर्म के दलदल में खो जाता है, तब भगवान विष्णु उसे सही रास्ता दिखाने हेतु अवतार करते हैं।
श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण के द्वारा कहा गया है :

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवाति भारत।
अभ्युथानम् अर्धमस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे।।

अर्थात् जब–जब धर्म की हानि और धर्म का उत्थान हो जाता है, तब–तब सज्जनों के परित्राण और दुष्टों के विनाश के लिए में विभिन्न युगों में (माया का आश्रय लेकर) उत्पन्न होता हूँ।
भगवान विष्णु के दस अवतार हैं :
मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि
वैदिक समय से ही विष्णु सम्पूर्ण विश्व की सर्वोच्च शक्ति तथा नियन्ता के रूप में मान्य रहे हैं। विष्णु पुराण 1/22/36 अनुसार भगवान विष्णु निराकार परब्रह्म जिनकों वेदों में ईश्वर कहा है चतुर्भुज विष्णु को सबसे निकटम मूर्त एवं मूर्त ब्रह्म कहा गया है। विष्णु को सर्वाधिक भागवत एवं विष्णु पुराण का वर्णन है और सभी पुराणों में भागवत पुराण को सर्वाधिक मान्य माना गया है जिसके कारण विष्णु का महत्व अन्य त्रिदेवों के तुलना में अधिक हो जाता है।
गीता अध्याय 11 में विश्वस्वरूप विराट स्वरूप के अतिरिक्त चतुर्भुज स्वरूप के दर्शन देना सिद्ध करता है परमेश्वर का चतुर्भुज स्वरूप सुगम है।
ऋग्वेद एवं अन्य वेदों में भी अनेकों सूक्त विष्णु को समर्पित है जिसको विष्णु सूक्त भी कहा गया है। ऋग्वेद में सर्वप्रथम स्वतंत्र रूप से विष्णु को मंडल 1 के सूक्त 22 में वर्णन आया है जिसमें विष्णु के वामन अवतार के तीन पग से तीन लोक मापने के वर्णन है।
अन्य रिग्वेदिक सूक्त 156, मंडल 7 सूक्त 100 में विष्णु के वर्णन हैं जिससे विष्णु को इंद्र का मित्र एवं वृत्त के वध हेतु इंद्र की सहायता करना वर्णन है जिससे त्रिदेव के विष्णु की महत्ता समझ आती है।
हिन्दू धर्म के आधारभूत ग्रन्थों में बहुमान्य पुराणानुसार विष्णु परमेश्वर के तीन मुख्य रूपों में से एक रूप है। पुराणों में त्रिमूर्ति विष्णु को विश्व या जगत का पालनहार कहा गया है। त्रिमूर्ति के अन्य दो रूप ब्रह्मा और शिव को माना जाता है। ब्रह्मा जी को जहाँ विश्व का सृजन करने वाला माना जाता है, वहीं शिव जी को संहारक माना गया है। मूलतः विष्णु और विश्व तथा ब्रह्मा भी एक ही हैं यह मान्यता भी बहुशः स्वीकृत रही है। न्याय को प्रश्रय अन्याय के विनाश तथा जीव (मानव) को परिस्थिति के अनुसार उचित मार्ग–ग्रहण के निर्देश हेतु विभिन्न रूपों में अवतार ग्रहण करनेवाले के रूप में विष्णु मान्य रहे है।
पुराणानुसार विष्णु की पत्नी महालक्ष्मी हैं। कामदेव विष्णु जी के पुत्र थे। विष्णु का निवास क्षीर सागर है। उनका शयन नागराज शेषनाग के ऊपर है। उनकी नाभि से कमल उत्पन्न होता है जिसमें ब्रह्मा जी स्थित हैं।
वह अपने नीचे वाले बाएँ हाथ में पद्म (कमल), अपने नीचे वाले दाहिने हाथ में गदा (कौमोदकी), ऊपर वाले बाँए हाथ में शंख (पाञ्जन्य) और अपने ऊपर वाले दाहिने हाथ में (सुदर्शन), धारण करते हैं।
पहले तीन अवतार अर्थात् तीन अवतार अर्थात् मत्स्य, कूर्म और वराह प्रथम महायुग में अवतीर्ण हुए। पहला महायुग सत्य युग का कृत युग है। नरसिंह, वामन, परशुराम और राम दूसरे अर्थात् त्रेतायुग में अवतरित हुए। कृष्ण और बुद्ध द्वापर युग में अवतरित हुए। इस समय चल रहा युग कलियुग है और भागवत पुराण की भविष्यवाणी के आधार पर इस युग के अंत में कल्कि अवतार होगा। इससे अन्याय और अनाचार का अंत होगा तथा न्याय का शासन होगा जिससे सत्य युग की फिर से स्थापना होगी।
विस्तार (सम्पादित करे)
हिन्दू धर्म–ग्रन्थों में सामान्यतः दशावतार की उपर्युक्त सूची स्वीकृत है, लेकिन विभिन्न ग्रन्थों में कुछ अंतर भी है।
उदाहरण के लिए कुछ धार्मिक समूहों की मान्यता के अनुसार कृष्ण ही परमात्मा हैं और दशावतार कृष्ण के ही दस अवतार हैं, अतः उनकी सूची में कृष्ण नहीं बल्कि उनके स्थान पर बलराम होते हैं। कुछ लोग बलराम को एक अवतार मानते हैं, बुद्ध की नहीं। सामान्यतः बलराम को आदिशेष (विष्णु के विश्राम के आधार) का अवतार माना जाता है।
दशावतार के बारे में अन्य विचारों में कुछ लोग अवतारों के क्रम को युक्तिसंगत बनाने की कोशिश में, उन्हें विकासवादी डार्विन के सिद्धान्त से जोड़ते हैं। इस विचार के अनुसार अवतार जलचर में

भूमिवास की ओर बढ़ते क्रम में हैं; फिर आधे जानवर से विकसित मानव तक विकास का क्रम चलते गया है। इस प्रकार दशावतार क्रमिक विकास का प्रतीक या रूपक की तरह है।

अवतार का प्रयोजन (सम्पादित करें)

श्रीमद्भगवतगीता के चतुर्थ अध्याय के सुप्रसिद्ध सातवें एवं आठवें श्लोक में भगवान ने स्वयं अवतार का प्रयोजन बताते हुए कहा कि–जब–जब धर्म की हानि और अधर्म का उत्थान हो जाता है, तब–तब सज्जनों के परित्राण और दुष्टों के विनाश के लिए मैं विभिन्न युगों में (माया का आश्रय लेकर) उत्पन्न होता हूँ। इसके अतिरिक्त भागवत महापुराण में एक विशिष्ट और अधिक उदात्त प्रयोजन की बात कही गयी है कि भगवान तो प्रकृति सम्बन्धी वृद्धि–विनाश आदि से परे अचिन्त्य, अनन्त, निर्गुण हैं। तो यदि वे अवतार रूप में अपनी लीला को प्रकट नहीं करते तो जीव उनके अशेष गुणों को कैसे समझते ? अतः जीवों के प्रेरणारूप कल्याण के लिए उन्होंने अपने को (अवतार रूप में) तथा अपनी लीला को प्रकट किया। इसलिए विभिन्न अवतार–कथाओं में कई विषम स्थितियाँ हैं जिससे जीव यह अवतारों की संख्या (सम्पादित करें)

विष्णु के अवतारों की पहली व्यवस्थित सूची महाभारत में उपलब्ध होती है। महाभारत के शान्तिपर्व में अवतारों की कुल संख्या 10 बतायी गयी है (मूलपाठ) :–

हंसः कुर्मश्च मत्स्यश्च प्रादुर्भावा द्विजोत्तम।।
वराहो नरसिंहश्च वामनो राम एव च।
रामो दाशरथिश्चैव सात्वतः कल्किरेव च।।

अर्थात (श्रीभगवान् स्वयं नारद से कहते हैं) हंस कूर्म मत्स्य वराह नरसिंह वामन परशुराम दशरथनन्दन राम यदुवंशी श्रीकृष्ण तथा कल्कि – ये सब मेरे अवतार हैं। आगे यह भी कहा गया है कि ये भूत और भविष्य के सभी अवतार हैं। मूलपाठ में वर्णन छह अवतारों का है :– 1. वराह, 2. नरसिंह, 3. वामन, 4. परशुराम, 5. राम, 6. कृष्ण चूँकि महाभारत बुद्ध के जन्म से पूर्व की अथवा बुद्ध के अवतारी होने की कल्पना से पहले की रचना है; अतः स्वाभाविक रूप से उसमें कहीं बुद्ध का नामोनिशान नहीं है। उसके बदले हंस को अवतार रूप में गिनने से दश की संख्या पूरी हो गयी है।

महाभारत के दक्षिणात्य पाठ में अवतार का वर्णन इस प्रकार है :–

मत्स्य कूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः। रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्किश्च ते दशाः।।

यहाँ पूर्वोक्त अवतारों में से हंस को छोड़कर तीसरे राम अर्थात् बलराम को जोड़ देने से दश की संख्या पूरी हो गयी है। इस विवरण से एक बात प्रमाणित हो जाती है कि महाभारत–काल तक दश से अधिक अवतारों की कल्पना भी नहीं की गयी थी; अन्यथा उन दश अवतारों को 'भूत' और भविष्य के भी सभी अवतार नहीं कहा गया रहता।

बाद में अन्य अवतारों की भी कल्पना प्रचलित हुई और कुल अवतारों की गणना चौबीस तक पहुँच गयी।

दशावतार (संपादित करें)

भागवत महापुराण में 22 तथा 24 अवतारों की गणना के बावजूद अवतारों की बहुमान्य संख्या महाभारत वाली दश ही रही है। पद्मपुराण (उत्तराखण्ड–257.40,41), लिंगपुराण (2.48.31.32), वराहपुराण (4.2), मत्स्यपुराण (2.85.6,7) आदि अनेक पुराणों में समान रूप से दश अवतारों की बात ही बतायी गयी है। अग्निपुराण के वर्णन (अध्याय–2 से 16) में भी बिल्कुल वही क्रम है। इस सन्दर्भ का निम्नांकित श्लोक (नाममात्र के पाठ भेदों के साथ) प्रायः सर्वनिष्ठ है :–

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्किश्च ते दश।।

इस प्रकार विष्णु के दश अवतार ही बहुमान्यता प्राप्त हैं। इनके संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं :–

मत्स्यावतार

पूर्व कल्प के अन्त में ब्रह्मा जी की तन्द्रावस्था में उनके मुख से निःसृत वेद को हयग्रीव दैत्य के द्वारा चुरा लेने पर भगवान ने मत्स्यावतार लिया तथा सत्यव्रत नामक राजा से कहा कि सातवें दिन प्रलयकाल आने पर समस्त बीजों तथा वेदों के साथ नौका पर बैठ जाएँ। उस समय सप्तर्षि के भी आ जाने पर भगवान् ने महामत्स्य के रूप में उस नौका को उन सबके साथ अनन्त जलराशि पर तैराते हुए उन सबको बचा लिया। पश्चात् हयग्रीव को मारकर वेद वापस ब्रह्मा जी को दे दिया।

कुर्मावतार

असुरराज बलि के नेतृत्व में दानवों द्वारा देवताओं को परास्त कर शासन–च्यूत कर देने पर भगवान ने देवताओं को दानवों के साथ मिलकर समुद्र मंथन करने को कहा और जब मन्थन के समय मंथानी (मन्दराचल) डूबने लगा तो कूर्म (कच्छप) रूप धारणकर उसे अपनी पीठ पर स्थित कर लिया। इसी मन्थन से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई।

वराहवतार

वराहावतार में भगवान् विष्णु ने महासागर (रसातल) में डुबायी गयी पृथ्वी का उद्धार किया। वहीं भगवान ने हिरण्याक्ष नामक दैत्य का वध भी किया था।

नरसिंहवतार

हिरण्याक्ष के वध के बाद उसके बड़े भाई विष्णुविरोधी असुराज हिरण्यकशिपु ने तपस्या के द्वारा अद्भुत वर पाया और देवताओं को परास्त कर अपना अखण्ड साम्राज्य स्थापित कर भगवद्क्तों पर भीषण अत्याचार करने लगा। हिरण्यकशिपु के चार पुत्र हुए जिनमें सबसे ज्येष्ठ प्रह्लाद था। (अन्य तीन पुत्रों के नाम अनुहलाद, सहलाद और हलाद) जब उसे ज्ञात हुआ कि उसका ज्येष्ठ पुत्र प्रहलाद विष्णु–भक्त है तो उसने उसका विचार बदलने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन असफल होकर उसे मार डालना चाहा। तब अपने भक्त प्रहलाद को अनेक तरह से भगवान विष्णु ने बचाया तथा वरदान की शर्त निभाते हुए नरसिंह रूप में आकर हिरण्यकश्पि का पेट अपने नाखूनों से चीरकर उसका वध कर डाला।

वामनावतार

प्रह्लाद के पौत्र, विरोचन के पुत्र असुरराज बलि द्वारा स्वर्गाधिपत्य प्राप्त कर लेने पर कश्यप जी के परामर्श से माता अदिति के पयोव्रत से प्रसन्न होकर भगवान ने उनके घर जन्म लेकर वामन रूप में बलि की यज्ञशाला में पधारकर तीन पग भूमि माँगी और फिर विराट रूप धारण कर दो पगों में पृथ्वी–स्वर्ग सब नापकर तीसरा पद रखने के लिए बलि द्वारा अपना सिर दिये जाने पर उसे सुतल लोक भेज दिया।

परशुरामावतार

अन्यायी क्षत्रियों विशेषतः हैहयवंश का नाश करने के लिए भगवान के परशुराम के रूप में अंशावतार ग्रहण किया था। उन्होंने इस पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रियहीन कर दिया। ये महान पितृभक्त थे। पिता की आज्ञा से इन्होंने अपनी माता का भी वध कर दिया था और पिता के प्रसन्न होकर वर मांगने के लिए कहने पर पुनः

माता को जीवित करवा लिया था। अत्याचारी कार्तवीर्य अर्जुन (सहस्त्रार्जुन के हजारों हाथों को इन्होंने युद्ध में काट डाला था; और उसके पुत्रों द्वारा जमदग्नि ऋषि (परशुराम जी के पिता) को बुरी तरह घायल कर हत्या देने पर इन्होंने अत्यन्त क्रोधित होकर उन सबका वध करके इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियहीन करके उनके रक्त में समन्तपंचक क्षेत्र में पाँच कुण्ड भर दिये थे। फिर यज्ञ करके सारी पृथ्वी कश्यप जी को लेकर महेन्द्र पर्वत पर चले गये।

रामावतार

इस विश्व–विश्वत अवतार में भगवान ने महर्षि पुलस्त्य जी के पौत्र एवं मुनिवर विश्रवा के पुत्र रावण–जो कुयोगवश दैत्य हुआ के द्वारा सीता का हरण कर लेने से वानर जातियों की सहायता से अनुचरों सहित रावण का वध करके आर्यावर्त को अन्यायी राक्षसों से मुक्त किया तथा आदर्श राज्य की स्थापना की। यह विशेष ध्यातव्य है कि मानवमात्र की प्रेरणा के लिए उच्चतम आदर्श–स्थापना का यह कार्य उन्होंने पूरी तरह मनुष्य–भाव से किया। रामकथा के लिए सर्वाधिक प्रमाणभूत एवं आधार ग्रंथ वाल्मीकीय रामायण में राम का चरित्र समर्थ मानव–रूप में ही चित्रित है। युद्धादि के समापन के बाद जब सभी देवता उन्हें ब्रह्म मानकर उनकी स्तुति करते हैं, तब भी वे कहते है कि – आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्। सोऽहं यश्च यतश्चाहं भगवांस्तद् ब्रवीतु मे। अर्थात् मैं तो अपने को दशरथपुत्र मनुष्य राम ही मानता हूँ। मैं जो हूँ और जहाँ से आया हूँ, हे भगवन (ब्रह्मा) ! वह सब आप ही मुझे बताइए। तब ब्रह्मा जी उन्हें सब बोलते हैं। लीला के लिए ही सही, पर पूरी तरह मनुष्यता का यह आदर्श अनुपम है; और जो प्रेरणा इससे मिलती है वह स्वयं को हर समय सर्वशक्तिमान परात्पर ब्रह्म मानते हुए लीला करने से (जैसा कि बाद की रामायणों में वर्णित है) कभी नहीं मिल सकती है।

कृष्णावतार

इस अवतार मेूं भगवान ने देवकी और वसुदेव के घर जन्म लिया था। उनका लालन पालन यशोदा और नंद ने किया था। इस अवतार में भगवानने विशिष्ट लीलाओं द्वारा सबको चकित करते हुए दुराचारी दैत्य कंस का वध किया; और विख्यात महाभारत–युद्ध में गीता–उपदेश द्वारा अर्जुन को युद्ध हेतु तत्पर करके विभिन्न विषम उपायों का भी सहारा लेकर कौरवों के विध्वंश के बहाने पृथ्वी के लिए भारस्वरूप प्रायः समस्त राजाओं को ससैन्य नष्ट करवा दिया। यहाँ तक कि उनके बतलाये आदर्शों की अवेहलना कर मद्यपान में रमने वाले यदुवंश का भी विनाश करवा दिया। श्रीकृष्ण ने यह शिक्षा दी कि जीवन की राह सीधी रेखा में ही नहीं चलती। धर्म और अधर्म का निर्णय परिस्थिति और अन्तिम परिणाम के आधार पर होता है, न कि परम्परा के आधार पर। श्रीकृष्ण की बहुत सी लीलाएँ अनुकरणीय नहीं, चिन्तन के योग्य हैं। राम का चरित्र अनुकरण के योग्य है। राम के चरित्र का अनुकरण नहीं, चिन्तन के योग्य हैं। राम के चरित्र का अनुकरण करके कृष्ण–चरित्र को समझ सकें, इसी में ज्ञान की सार्थकता है। कृष्ण–चरित्र का वर्णन अनेक पुराणों में है। परन्तु महाभारत के अन्तर्गत आये अंशों के अतिरिक्त शेष बाल–लीला एवं अन्य लीलाओं का प्राचीन रूप हरिवंशपुराण में है; उसके बाद का रूप विष्णुपुराण में तथा सर्वथा परिष्कृत रूप श्रीमद्भागवत पुराण के पूरे दशम स्कन्ध में है।

वृद्धावतार

महाभारत में बुद्ध का अवतार के रूप में तो नहीं ही, व्यक्ति रूप में भी नामोनिशान नहीं है। हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में उनकी पहली उपस्थिति महाभारत का खिल (परिशिष्ट) भाग माने जाने वाले हरिवंशपुराण में है, परन्तु विरोध के रूप में। भागवत महापुराण तक में उन्हें मोहित–भ्रमित करनेवाला ही माना गया है। अथर्ववेद की शाब्दिक स्पष्टता से लेकर महाभारत तक में हिंसा के अत्यधिक विरोध के बावजूद सनातन (हिन्दू) धर्म में इस कदर हिंसा व्याप्त हो गयी कि अंहिसा के प्रबल उपदेशक बुद्ध को जयदेव के समय (12वीं शती) से पहले ही पूरी तरह भगवान का सहज अवतार मानकर उनके उपदेशों को मान्यता दे दी गयी। गीतगोविन्दम के प्रथम सर्ग में ही दशावतार वर्णन के अन्तर्गत जयदेव जी ने बुद्ध की स्तुति में यहीं कहा है कि आपने श्रुतिवाक्यों (के बहाने) से यज्ञ में पशुओं की हत्या देखकर सदय हृदय होने से यज्ञ की विधियों की निन्दा की।

कल्कि अवतार

यह भविष्य का अवतार है। कलियुग का अन्त समीप आ जाने पर जब अनाचार बहुत बढ़ जाएगा और राजा लोग लूटेरे हो जाएँगे, तब सम्भल नामक ग्राम के विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर होगी। धर्म की वृद्धि होना ही सत्य युग (कृतयुग) का आना है।

मत्स्य अवतार

मत्स्यवतार भगवान विष्णु का अवतार है जो उनके दस अवतारों में से एक वह प्रथम है। विष्णु को पालनकर्ता कहा जाता है अतः वह ब्रह्मांड की रक्षा हेतु विविध अवतार धारण करते हैं। यह अवतार भगवान ने वेदों को बचाने के लिए और असुर हैग्रीव को मारने के लिए धरा था। साथ ही साथ वैवस्वतः मनु सप्तऋषिगण वह सारे जीव जन्तुओं को प्रथम कल्प की प्रलय से बचाने के लिए भी लिया था।

कथा जब संसार को किसी प्रकार का खतरा होता है तब भगवान विष्णु अवतरित होते हैं। ब्रम्हांड की आवाधिक विघटन के प्रलय के ठीक पहले जब प्रजापति ब्रह्मा के मुँह से वेदों का ज्ञान निकल गया, तब असुर हयग्रीव ने उस ज्ञान को चुराकर निगल लिया। तब भगवान विष्णु अपने प्राथमिक अवतार मत्स्य के रूप में अवतीर्ण हुए और स्वयं को राजा सत्यव्रत मनु के सामने एक छोटी, लाचार मछली बना लिया।

सुबह सत्यव्रत सूर्यदेव को अर्ध्य दे रहे थे तभी एक मछली ने उनसे कहा कि आप मुझे अपने कमंडल में रख लो। दया और धर्म के अनुसार इस राजा ने मछली को अपने कमंडल में ले लिया और घर की ओर निकले, घर पहुँचते तक वह मत्स्य उस कमंडल के आकार का हो गया, राजा ने इसे एक पात्र पर रखा परंतु कुछ समय बाद वह मत्स्य उस पात्र के आकार की हो गई। अंत में राजा ने उसे समुद्र में डाला तो उसने पूरे समुद्र को ढँक लिया। उस सुनहरी–रंग मछली ने अपने दिव्य पहचान उजागर की और अपने भक्त को यह सूचित किया कि उस दिवस के ठीक सातवें दिन प्रलय आएगा तत्पश्चात् विश्व का नया सृजन होगा वे सत्यव्रत को सभी जड़ी–भूति, बीज और पशुओं, सप्त ऋषि आदि को इकट्ठा करके प्रभु द्वारा भेजे गए नाव में संचित करने को कहा।

फिर यह अति–विशाल मछली हयग्रीव को मारकर वेदो को गुमनाम होने से बचाया और उसे ब्रह्मा को दे दिया। जब ब्रह्मा अपने नींद से उठे जो परलय के अन्त में था, इसे ब्रम्ह की रात पुकारा जाता हैं, जो गणना के आधार पर 432000000 सालों तक चलता है। जब ज्वार ब्रह्मांड को भस्म करने लगा तब एक विशाल नाव आया, जिस पर सभी चढ़े। मत्स्य भगवान ने उसे नागराज वासुकी को डोर बनाकर बाँध लिया और सुमेरू पर्वत की ओर प्रस्थान किया।

रास्ते में भगवान मत्स्य नारायण ने मनु (सत्यव्रत) को मत्स्य पुराणा सुनाया और इस तरह प्रभु ने सबकी प्रलय से रक्षा की, तथा पौधों तथा जीवों की नस्लों को बचाया और मत्स्य पुराण की विद्या को नवयुग में प्रसारित किया।

मन्वन्तर

मनु हिन्दू धर्म अनुसार, मानवता के प्रजनक, की आयु होती है। यह समय मापन की खगोलीय अवधि है। मन्वन्तर एक संस्कृत शब्द है, जिसका संधि–विच्छेद करने पर मनु+अन्तर मिलता है। इसका अर्थ है मनु की आयु प्रत्येक मन्वन्तर एक विशेष मनु द्वारा रचित एवं शासित होता है, जिन्हें ब्रह्मा द्वारा सृजित किया जाता है। मनु विश्व की और सभी प्राणियों की उत्पत्ति करते हैं, जो कि उनकी आयु की अवधि तक बनती और चलती रहती हैं, (जातियाँ चलतीं हैं, ना कि उस जाति के प्राणियों की आयु मनु के बराबर होगी) उन मनु की मृत्यु के उपरांत ब्रम्हा फिर एक नये मनु की सृष्टि करते हैं, जो कि फिर से सभी सृष्टि करते हैं। इसके साथ साथ विष्णु भी आवश्यकता अनुसार समय–समय पर अवतार लेकर इसकी संरचना और पालन करते हैं। इनके साथ ही एक नये इंद्र और सप्तर्षि भी नियुक्त होते है।

चौदह मनु और उनके मन्वन्तर को मिलाकर एक कल्प बनता है। यह ब्रम्हा का एक दिवस होता है। यह हिन्दू समय चक्र और वैदिक समयरेखा के नौसार होता है। प्रत्येक कल्प के अन्त में प्रलय आती है जिसमें ब्रह्माण्ड का संहार होता है और वह विराम की स्थिति में आ जाता है, जिस काल को ब्रह्मा की रात्रि कहते हैं।

महाप्रलय के समय वैवस्वत मनु एवं सात ऋषियों की रक्षा करती मत्स्य सनातन धर्म के अनुसार मनु संसार के प्रथम पुरूष थे। मनु का जन्म आज से लगभग 40 लाख साल पूर्व हुआ था प्रथम मनु का नाम स्वयंभुव मनु था, जिनके संग प्रथम स्त्री थी शतरूपा। ये 'स्वयं भू' (अर्थात् स्वयं उत्पन्न ; बिना माता–पिता के उत्पन्न) होने के कारण ही स्वयंभू कहलायें। इन्हीं प्रथम पुरूष और प्रथम स्त्री की सन्तानों से संसार के समस्त जनों की उत्पत्ति हुई। मनु की सन्तान होने के कारण वे मानव या मनुष्य कहलाए। स्वांयभुव मनु को आदि भी कहा जाता है। आदि का अर्थ होता है प्रारंभ। सभी भाषाओं के मनुष्य–वाची शब्द मैन, मनुज, मानव, आदम, आदमी आदि सभी मनु शब्द से प्रभावित है। यह समस्त मानव जाति के प्रथम संदेशवाहक हैं। इन्हें प्रथम मानने के कई कारण है। सभी मनु की संताने हैं इसीलिए मनुष्य को मानव भी कहा जाता है। ब्रह्मा के एक दिन को कल्प कहते है। एक कल्प में मनु 14 मनु हो जाते हैं। एक मनु के काल को मन्वन्तर कहते हैं। वर्तमान में वैवस्वत मनु है।

कल्प

हिन्दू समय चक्र की बहुत लम्बी मापन इकाई है। मानव वर्ष गणित के अनुसार 360 दिन का एक दिव्य अहोरात्र होता है। इसी हिसाब 12000 वर्ष का एक चतुर्युगी होता है। 71 चतुर्युगी का एक मन्वन्तर होता है और 14 मन्वन्तर/1000 चतुरयुगी का एक कल्प होता है। यह शब्द का अति प्राचीन वैदिक हिन्दू ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। यह बौद्ध ग्रन्थों में भी मिलता है, हालाँकि बहुत बाद के काल में वह भी हिन्दू वैदिक धर्म ग्रन्थ से लिया हुआ ही है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि बुद्ध एक हिन्दू परिवार में जन्में हिन्दू ही थे जिनके लगभग 500 वर्ष पश्चात् उनके अनुयायी राजकुमार सिद्धार्थ जो बोध ग्यान के बाद गौतम बुद्ध नाम से प्रसिद्ध हुए।

परिचय

सृष्टिक्रम और विकास की गणना के लिए कल्प हिन्दूओं का एक परम प्रसिद्ध मापदंड है। जैसे मानव की साधारण आयु सौ वर्ष है, वैसे ही सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की भी आयु सौ वर्ष मानी गई है, परन्तु दोनों गणनाओं में बड़ा अन्तर है। ब्रह्मा का एक दिन कल्प कहलाता है, उसके बाद प्रलय होता है। प्रलय ब्रह्मा की एक रात है जिसके पश्चात् फिर नई सृष्टि होती है।

चारों युगों के एक चक्कर को चतुर्युगी अथवा पर्याय कहते हैं। 1000 चतुर्युगी अथवा पर्यायों का एक कल्प होता है। ब्रह्मा के एक मास में तीस कल्प होते हैं जिनके अलग–अलग नाम हैं, जैसे श्वेताराह कल्प, नीललोहित कल्प आदि। प्रत्येक कल्प के 14 भाग होते हैं और इन भागों को मन्वन्तर कहते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर का एक मनु होता है इस प्रकार स्वांयभुव, स्वारोचिष आदि 14 मनु है। प्रत्येक मन्वन्तर के अलग–अलग सप्तर्षि, इद्रं तथा इंद्राणी आदि भी हुआ करते हैं। इस प्रकार ब्रह्मा के आज तक 50 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, 51 वें वर्ष का प्रथम कल्प अर्थात श्वेताराह कल्प प्रारंभ हुआ है। वर्तमान मनु का नाम वैवस्वतः मनु है और इनके 27 चतुर्युगी बीत चुके हैं, 28 वें चतुर्युगी के भी तीन युग समाप्त हो गए हैं चौथे अर्थात कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है।

प्रलय

प्रलय का अर्थ होता है संसार का अपने मूल कारण प्रकृति में सर्वथा लीन हो जाना, सृष्टि का सर्वनाश, सृष्टि का जलमग्न हो जाना। पुराणों में काल को चार युगों में बाँटा गया है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार जब चार युग पूरे होते हैं तो प्रलय होती है। इस समय ब्रह्मा सो जाते है और जब जागते हैं तो संसार का पुनः निर्माण करते हैं और युग का आरम्भ होता है।

प्रकृति का ब्रह्म में लीन (लय) हो जाना ही प्रलय है। संपूर्ण ब्रह्मांड ही प्रकृति कहीं गई हैं जो सबसे शक्तिशाली।

कथानक

वैवस्वत मन्वन्तर में जो अभी भी चल रहा है, जब प्रलय समीप आया तो प्रलय से सात दिन पहले भगवान ने मत्स्य अवतार लिया। इसी समय ब्रह्मा ने भूल से वेदों का ज्ञान निकाल दिया जिसे भगवान मत्स्य नारायण ने बचाया। और सत्यव्रत जो एक महान राजा थे उसे प्रलय से अवगत कराया।

जब राजा सुबह स्नान हेतु एक नदी में गया तो उसे एक असहाय मछली की पुकार सुनाई दी, वह कह रही थी कि कोई उसे सुरक्षित करे। राजा ने उसे एक कमंडल में रखा, घर तक पहुँचते हुए वह मछली कमंडल के आकार की हो गई तब राजा ने उसे एक पात्र में रखा। पात्र भी छोटा पड़ने लगा, तब समुद्र में छोड़ा और समुद्र भी उस मछली के लिये छोटा पड़ने लगा।

तभी उस मछली ने बोला कि सात दिन पश्चात प्रलय होगा, राजा! तुम सप्तर्षि तथा अन्य जीवों को इकट्ठे करो और मेरे भेजे गए नाव पर बैठ जाना। राजा ने ऐसा ही किया और सब बच गए।

सन्दर्भः मत्स्य अवतार

इससे मिलती जुलती कथाएँ अन्य धर्मों में भी मिलती है –

नूह की कहानी उस वक्त नूह की उम्र छह सौ वर्ष थी जब यहोबा (ईश्वर) ने उनसे कहा कि तू एक–जोड़ी सभी तरह के प्राणी समेत अपने सारे घराने को लेकर कश्ती पर सवार हो जा, क्योंकि में पृथ्वी पर जल प्रलय लाने वाला हूँ।

सात दिन के उपरान्त प्रलय का जल पृथ्वी पर आने लगा। धीरे–धीरे जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया। यहाँ तक कि सारी धरती पर जितने बड़े–बड़े पहाड़ थे, सब डूब गए। डूब गए वे सभी जो कश्ती से बाहर रह गए थे, इसलिए वे सब पृथ्वी पर से मिट गए। केवल हजरत नूह और जितने उनके साथ जहाज में थे, वे ही बच गए। जल ने पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक पहाड़ को डुबोए रखा। फिर धीरे–धीरे जल उतरा तब पुनः धरती प्रकट हुई और कश्ती में जो बच गए थे उन्हीं से दुनिया पुनः आबाद हो गई।

नूह ही यहूदी, ईसाई और इस्लाम के पैगम्बर हैं। इस पर शोध भी हुए हैं। जल प्रलय की ऐतिहासिक घटना संसार की सभी सभ्यताओं में पाई जाती है। बदलती भाषा और लम्बे कालखंड के

चलते इस घटना में कोई खास रद्दोबदल नहीं हुआ है।
हिन्दू शास्त्रों में प्रलय के चार प्रकार बताए गए हैं – नित्य, नैमित्तिक, द्विपार्थ और प्राकृत। एक अन्य पौराणिक गणना अनुसार यह क्रम है नित्य, नैमित्तक आत्यान्तिक और प्राकृतिक प्रलय।

नित्य प्रलय

वेदांत के अनुसार जीवों की नित्य होती रहने वाली मृत्यु को नित्य प्रलय कहते हैं। जो जन्म लेते हैं उनकी प्रतिदिन की मृत्यु अर्थात प्रतिपल सृष्टि में जन्म और मृत्यु का चक्र चलता रहता है।

आत्यन्तिक प्रलय

आत्यन्तिक प्रलय योगीजनों के ज्ञान के द्वारा ब्रह्म में लीन हो जाने को कहते हैं। अर्थात मोक्ष प्राप्त कर उत्पत्ति और प्रलय चक्र से बाहर निकल जाना ही आत्यन्तिक प्रलय है।

नैमित्तिक प्रलय

वेदांत के अनुसार प्रत्येक कल्प के अंत में होने वाला तीनों लोकों का क्षय या पूर्ण विनाश हो जाना नैमित्तिक प्रलय कहलाता है। पुराणों अनुसार जब ब्रह्मा का एक दिन समाप्त होता है, तब विश्व का नाश हो जाता है। चार हजार युगों का एक कल्प होता है। ये ब्रह्मा का एक दिन माना जाता है। इसी प्रलय में धरती या अन्य ग्रहों से जीवन नष्ट हो जाता है।
नैमत्तिक प्रलयकाल के दौरान कल्प के अंत में आकाश से सूर्य की आग बरसती है। इनकी भयंकर तपन से सम्पूर्ण जलराशि सूख जाती है। समस्त जगत जलकर नष्ट हो जाता है। इसके बाद संवर्तक नाम का मेघ अन्य मेघों के साथ सौ वर्षों तक बरसता है। वायु अत्यन्त तेज गति से सौ वर्ष तक चलती है।

प्राकृत प्रलय (सम्पादित करे)

ब्राह्मांड के सभी भूखण्ड या ब्रह्माण्ड का मिट जाना, नष्ट हो जाना या भस्मरूप हो जाना प्राकृत प्रलय कहलाता है। वेदांत के अनुसार प्राकृत प्रलय अर्थात प्रलय का वह उग्र रूप जिसमें तीनों लोकों सहित महत्व अर्थात प्रकृति के पहले और मूल विकार तक का विनाश हो जाता है और प्रकृति भी ब्रह्म में लीन हो जाती है अर्थात संपूर्ण ब्रह्मांड शून्यावस्था में हो जाता है। न जल होता है, न वायु, न अग्नि होती है और न आकाश और न अन्य कुछ।

उपसंहार

पुराणों अनुसार प्राकृतिक प्रलय ब्रह्मा के सौ वर्ष बीतने पर अर्थात ब्रह्मा की आयु पूर्ण होते ही सब जल में लय हो जाता है। कुछ भी शेष नहीं रहता। जीवों को आधार देने वाली ये धरती भी उस अगाध जलराशि में डूबकर जलरूप हो जाती है। उस समय जल अग्नि में, अग्नि वायु में, वायु आकाश में और आकाश महत्व में प्रविष्ट हो जाता है। महत्व प्रकृति में, प्रकृति पुरूष में लीन हो जाती है। उक्त चार प्रलयों में से नैमित्तिक एवं प्राकृतिक महाप्रलय ब्रह्मांण्डों से सम्बन्धित होते हैं तथा शेष दो प्रलय देहधारियों से सम्बन्धित है।
इस पुराण में सात कल्पों का कथन है, नृसिंह वर्णन से शुरू होकर यह चौदह हजार श्लोकों का पुराण है। मनु और मत्स्य के संवाद से शुरू होकर ब्रह्माण्ड का वर्णन ब्रह्मा देवता और असूरों का पैदा होना, मरुद्रणों का प्रादुर्भाव इसके बाद राजा पृथु के राज्य का वर्णन वैवस्त मनु की उत्पत्ति व्रत और उपवासों के साथ मार्तण्डशयन व्रत द्वीप और लोकों का वर्णन देव मन्दिर निर्माण प्रासाद निर्माण आदि का वर्णन है। इस पुराण के अनुसार मत्स्य (मछली) के अवतार में भगवान विष्णु ने एक ऋषि को सब प्रकार के जीव–जन्तु एकत्रित करने के लिये कहा और पृथ्वी जब जल में डूब रही थी, तब मत्स्य अवतार में भगवान ने उस ऋषि की नांव की रक्षा की थी। इसके पश्चात ब्रह्मा ने पुनः जीवन का निर्माण किया। एक दूसरी मान्यता के अनुसार एक राक्षस ने जब वेदों को प्राप्त किया और उन्हे पुनः स्थापित किया। पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु ने सृष्टि को प्रलय से बचाने के लिए मत्स्यावतार लिया था। इसकी कथा इस प्रकार है – कृतयुग के आदि में राजा सत्यव्रत हुए। राजा सत्यव्रत एक दिन नदी में स्नान कर जलांजलि दे रहे थे। अचानक उनकी अंजलि में एक छोटी सी मछली आई। उन्होंने देखा तो सोचा वापस सागर में डाल दूं, लेकिन उस मछली ने बोला – आप मुझे सागर में मत डालिए अन्यथा बड़ी मछलियों मुझे खा जाएंगी। तब राजा सत्यव्रत ने मछली को अपने कमंडल में रख लिया। मछली और बड़ी हो गई तो राजा ने उसे अपने सरोवर में रखा, तब देखते ही देखते मछली और बड़ी हो गई।
राजा को समझ आ गया कि यह कोई साधारण जीव नहीं है। राजा ने मछली से वास्तविक स्वरूप में आने की प्रार्थना की। राजा की प्रार्थना सुन साक्षात चारभुजाधारी भगवान विष्णु प्रकट हो गए और उन्होंने कहा कि ये मेरा मत्स्यावतार है। भगवान ने सत्यव्रत से कहा – सुनो राजा सत्यव्रत ! आज से सात दिन प्रलय होगी। तब मेरी प्रेरणा से एक विशाल नाव तुम्हारे पास आएगी। तुम सप्त ऋषियों, औषधियों, बीजों व प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को लेकर उसमें बैठ जाना, जब तुम्हारी नाव डगमगाने लगेगी, तब में मत्स्य के रूप में तुम्हारे पास आऊंगा। उस समय तक वासुकि नाग के द्वारा उस नाव को मेरे सींग से बांध देना। उस समय प्रश्न पूछने पर मैं तुम्हें उत्तर दूंगा, जिससे मेरी महिमा जो परब्रह्म नाम से विख्यात है, तुम्हारे हृदय में प्रकट हो जाएगी। तब समय आने पर मत्स्यरूपधारी भगवान विष्णु ने राजा सत्यव्रत को तत्वज्ञान का उपदेश दिया, जो मत्स्यपुराण नाम से प्रसिद्ध है। राजा सत्यव्रत के घर पहुँचने तक वह मछली कमंडल के आकार की हो जाती है। सत्यव्रत उसे एक बड़े पानी के पात्र में रख देता है। मछली अब उस पानी के पात्र जितनी बड़ी हो जाती है। सत्यव्रत के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा और उसने अब मछली को समुद्र में डाल दिया। देखते ही देखते वह मछली समुद्र जितनी बड़ी हो जाती है। सत्यव्रत समझ जाता है कि यह भगवान का कोई चमत्कार है। राजा ने मछली से निवेदन किया कि वो अपने असली स्वरूप में दर्शन दे। मछली का रूप लिए हुए भगवान विष्णु प्रकट होते है। भगवान विष्णु ने राजा सत्यव्रत से कहा की आज से 7वें दिन पूरे विश्व में एक प्रलय आएगी। में तुम्हारे पास एक बड़ी नाव भेजूंगा। तुम सप्तऋषि, औषधियों, बीजों और प्राणियों के जोड़ों को मेरी भेजी हुई नाव में संचित कर लेना। प्रलय के दिन सत्यव्रत ऐसा ही करते है। मत्स्य रूपी भगवान विष्णु वासुकी नाग का एक सिरा नाव से बांध देते है। नाग का दूसरा सिरा खुद से बांधते है। भगवान के कहे अनुसार सत्यव्रत और बाकी के जीव इस नाव पर चढ़ जाते है। ब्रह्मा सृष्टि में प्रलय लाते है और सत्यव्रत सुमेरू पर्वत की तरफ प्रस्थान करते है।

संदर्भ सूची

1. ''तो इसलिये भगवान विष्णु अपने हाथों में रखते हैं
2. ये तीन चीज, जाने महत्व'' पत्रिका मूल से 13 दिसंबर 2019 को पुरोलिखित
3. क) हिन्दी निरुक्त (निघण्टु सहित) – पं. सीताराम शास्त्री ; मुन्शीराम मनोहरलाल
4. दिल्ली, संस्करण–अनुल्लिखित, पृ. 500 (उत्तर षटक –12–18) (ख) निरुक्त (भाषा भाष्य) – पं. राजाराम; बाम्बे मशीन प्रेस, लाहौर; प्रथम संस्करण – 1914, पृ.535
5. विष्णुसहस्रनाम, सानुवाद शांकरभाष्य सहित; गीताप्रेस गोरखपुर; संस्करण–1999
6. ई0, पृ.7 एवं 66 (श्लोक–6 एवं 14 का भाष्य)

7. पूर्वव्रत–पृ. 66 तथा विष्णुपुराण – 3.1.45 (गीताप्रेस गोरखपुर ; संस्करण–2001ई.)
8. (क) ऋग्वेद संहिता (पदपाठ, सायण भाष्य एवं पं. रामगोविन्द त्रिवेदी कृत हिन्दी अनुवाद सहित) – चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी; संस्करण – 2007ई. (खण्ड–2) पृ. 196, 198, (ख) ऋग्वेदसंहिता (सायण भाष्य एवं भाष्यानुवाद सहित) – चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी; संस्करण – 2013 ई. , (खण्ड–2), पृ. 786, 788
9. ऋग्वेद का सुबोध भाष्य, भाग–2, श्रीपाद दामोदर, सातवेलकर; स्वाध्याय मण्डल, किल्ला पारडी, वलसाड (गुजरात); (प्रथम खण्ड) संस्करण–अनुल्लिखित, पृ. 403
10. ऋग्वेद (दयानन्द भाष्य) भाग–1–महर्षि दयानन्द सरस्वती; आर्य प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2011ई., पृ. 781–783
11. वैदिक देवशास्त्र (मैकडानल रचित 'वैदिक माइथोलॉजी) अनुवादक–डॉ. सूर्यकान्त; मेहरचन्द लछमदास, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1961, पृ. 84
12. (क) हिन्दी निरुक्त (निघण्टु सहित) – पं. सीताराम शास्त्री ; मुन्शीराम मनोहरलाल
13. दिल्ली, संस्करण–अनुल्लिखित, पृ. 500 (उत्तर षटक –12–19) (ख) निरुक्त (भाषा भाष्य) – पं. राजाराम; बाम्बे मशीन प्रेस, लाहौर; प्रथम संस्करण – 1914, पृ.535–536, (12–19)
14. ऋग्वेद, पूर्ववत्, उक्त मंत्र का चारों संस्करणों में संबंद्ध भाष्य द्रष्टव्य।
15. ऐतरेय ब्राह्मणम् – 6.3.15 (सायण भाष्य तथा मूल की हिन्दी टीका सहित), सं. तथा अनु.– डॉ. सुधाकर मालवीय ; तारा बुक एजेन्सी, संस्करण–2007 (प्रथम खण्ड), पृ.12, 13 (भूमिकादि के पश्चात्)। (क) ऐतरेय ब्राह्मणम् – 6.3.15 (सायण भाष्य तथा मूल की हिन्दी टीका सहित), सं. तथा अनु.– डॉ. सुधाकर मालवीय ; तारा बुक एजेन्सी, संस्करण–2007 (द्वितीय खण्ड), पृ. 968–969 (ख) शतपथ ब्राह्मण (प्रथम भाग) – सं. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, अनुवादक– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय; विजयकुमार गोविन्दराम हासानद, दिल्ली; संस्करण–2010ई. पृ. 188–189 (1.9.3.9)
16. विष्णुपुराण, पूर्ववत् – 1.1.12; तथा महाभारत, शान्तिपर्व–341. 41 (सटीक, छह खण्डों में, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण–1996ई.
17. पद्मपुराण, उत्तर खण्ड–194.85 (आनन्दाश्रम मुद्रणालय, भाग–4, संस्करण–1894ई.,पृ.1614; तथा सहित पद्मपुराण, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण–2001ई. पृ. 868
18. शिवपुराण, रुद्रसंहिता, अध्याय–41 (संक्षिप्त शिवपुराण, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण–2000ई., पृ.382–383)
19. विष्णुपुराण, पूर्ववत्–1.22.68 से 75
20. (क) विष्णुपुराण, पूर्ववत्–1.3.66;(ख) स्कन्दपुराण, माहेश्वर खण्डान्तर्गत केदारखण्ड–8.20 (कलकत्ता संस्करण, भाग–1, पृ.43; तथा संक्षिप्त स्कन्दपुराण, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण–2001ई., पृ.17) (ग) महाभारत, पूर्ववत्, शान्तिपर्व–341.27; (घ) कूर्मपुराण (सटीक), गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण–2004ई. पूर्वविभाग–2.95
21. हिन्दी विश्वकोश, प्रथम खण्ड, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; संस्करण–1973ई., पृ.277
22. पुराण–विमर्श, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; संस्करण–2002ई., पृ.163
23. अग्निपुराण, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण–200ई., पृ. 2 से 28
24. महाभारत, पूर्ववत्, वनपर्व–116, 117 तथा भाग, पूर्ववत्–9.16
25. वाल्मीकीय रामायण–7.9 (सटीक खण्ड–2, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण–1995ई.)
26. गीतगोविन्दकाव्यम्–सर्ग–1, प्रबन्ध–1, श्लोक–9 (सटीक), आ. शिवप्रसाद द्विवेदी, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण–2015, पृ.22